9 . नीति दोहे

I रहीम (कवि परिचय) : -

रहीम का पूरा नाम अबदुर्रहीम खान खाना है। वे अकबर के दरबार में नौरत्नों में से एक थे /उनका जन्म 1556 और मृत्यु 1626 ई. मानी जाती है। संस्कृ त, अरबी,फारसी के विद्वान थे। प्रसिध्द रचनाएँ रहीम सतसई, बरवै नायिका, भेद, श्रृंगार सोरठा आदि है।

बिहारी (कवि परिचय): रीति काल के प्रसिध्द कवि माने जाते हैं। इनका जन्म 1595और मृत्यु 1663 मानी जाती है। इनके दोहे नीति परक होते है। बिहारी सतसई इनकी प्रसिध्द रचना है। इन्होने नीति के दोहो द्वारा सागर को गागर में भर ने का प्रयत्न किया है।

II. उन्मुखीकरण प्रश्नोत्तर :

प्र.1. कवि ने बिना फल वाले वृक्षों के विषय में क्या कहा है?

उ. कवि ने कहा है कि बिना फल वाले वृक्ष व्यर्थ ही अपनी अकड़ (ऐंठ) दिखाते है। वे अकड़े हुए खडे रहते है।

प्र.2. फलदार वृक्ष की विशेषता बताइए?

उ. फलदार वृक्ष झुक जाते हैं। विनम्र हो जाते हैं।

प्र.3. बुलबुल और कौए में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उ. बुलबुल की आवाज मीठी मधुर होती है। कौए की आवाज कर्कश होती है। कौए की आवाज कानों को बुरी लगती ह।

III. उध्देश्य :

विद्यार्थियों को काव्य रचना एवं दोहा छंद से परिचित कराना, सृजन (लिखने) की प्रेरणा देना और नैतिक दोहों का जीवन में क्या महत्व है यह बता कर नीतिपूर्ण उपदेश देते हुए नैतिक मूल्यों का विकास करना ही मुख्य उध्देश्य है।

IV. विद्या विशेष :

दोहा काव्य शास्त्र का एक अंग है। ये मात्रिक छंद है। दोह के पहले एवं तीसरे चरमें 13-13 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती है। यहाँ पर रहीम

एवं बिहारी कवि के नीति परक एवं उपदेशात्मक दोहे दिए गए है।

दोहा : 1. कहि रहीम संपति सगे बनत बहुत बहु रीति।

2. विपत्ति कसौटी जे कसै तेई साँचे मीत।

V. रहीम के दोहों के शब्दार्थ :

1.

1. कहि रहीम = रहीम कहते हैं	2. संपत्ति = धन, संपदा
3. सगे = निकट का सम्बन्ध	4. बनत = बनते हैं
5. बहुत = बहुत (अधिक)	6. बहुरीति= अनेक ढंग से (अनेक प्रकार से)
7. विपत्ति = संकट में	8. कसौटी= जाँच (परखना)
9. जे कसै = कसना (घिसना)	10. तेई = वही
11. साँचे = सच्चें	12. मीत = मित्र (बन्धु)

VI. रहीम का प्रथम दोहा (सार-भावार्थ)

रहीम कहते है कि जब कोई व्यक्ति धनवान बन जाता है, सुखी होता है तो सुखमें उसके कई सम्बन्धी, सगे, मित्र बन जाते हैं परन्तु विपत्ति में सभी हमारा साथ छोड़ देते हैं। रहीम कहते है कि जो व्यक्ति विपत्ति में दु:ख में हमारा साथ देता है वही हमारा सगा और सच्चा मित्र हैं। विपत्ति के समय ही सच्चे मित्र की पहचान होती है।

VII. दूसरा दोहा शब्दार्थ एवं भाव :

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरै मोती, मानुष चून।।

शब्दार्थ :

1. रहिमन	=	रहीम	2. पानी	=	जल, इज्ज़त (मान), काँति (चमक) तीन अर्थ में प्रयोग हुआ है
3. बिन	=	बिना	4. सून	=	व्यर्थ
5. ऊबरै	=	उद्धार (महत्व)	6. मोती	=	मुक्ता
8. मानुष	=	मनुष्य	. चून	=	चूना

भावार्थ : प्रस्तुत दोहे में रहीम ने पानी शब्द के लिए जल, इज्जत एवं चमक तीन अर्थो में प्रयोग करते हुए कहते है कि पानी के बिना मोती, मनुष्य और चूना ये तीनों व्यर्थ है। स्पष्ट करते हुए कहते है कि इज्जत के बिना मनुष्य, चमक के बिना माती और जल के बिना चूना निरुपयोगी एवं व्यर्थ हैं। इसलिए इनकी रक्षा और महत्व पर ध्यान देना चाहिए।

VIII. बिहारी का प्रथम दोहा एवं शब्दार्थ, भाव :

1. कनक कनक तै सौं गुनी, मादकता अधिकाइ।

उहि खाए बौराए जग, इहिं पाए बौराइ।।

शब्दार्थ :

1. कनक = धतुरा एवं स्वर्ण (सोना)	2. तै = से
3. सौगुनी = सौ गुणा	4. मादकता = नशा
5. अधिकाई= अधिक होता है।	6. उहि खाए = उसे खाकर
7. बौराए = पागल होता	8. जग = संसार
9. इहि पाए = इसे पाकर (स्वर्ण पाकर)	10. बौराइ= पागल हो जाता है।

भावार्थ :

इस दोहे में बिहारी लाल कनक शब्द के दो अर्थ बताते हैं एक कनक शब्द का अर्थ धतूरा और दूसरे कनक शब्द का अर्थ स्वर्ण (सोना) है। धतुरे की अपेक्षा स्वर्ण का नशा सौगुणा अधिक होता है क्यों कि धतुरा खाने के कुछ देर बाद नशा चढ़ता है और मनुष्य पागल की तरह व्यवहार करता है परन्त सोना (स्वर्ण) धन संपत्ति के पा. लेने मात्र से ही मनुष्यपाग ल हो जाता है।

2. नर की ऊरु नल नीर की, गति एकै कर जोइ

जैतो नीचौ हवै चलै, तैतै ऊँचौ होई।

शब्दार्थ :

1.	नर	=	मनुष्य, आदमी	2.	अरू	=	और
3.	नल	=	नल (टोंटी)	4.	नीर	=	जल, पानी
5.	एकै	=	एक	6.	नीचौ	=	नीचे
7.	जेतौ	=	जैसे	8.	ते तौ	=	वैसे, तैसे
9.	ऊँचौ	=	ऊँचे	10.	होई	=	होता है
11.	चलै	=	चलना				

भावार्थ :

इस दोहे में बिहारी कहते हैं कि नर तथा नल के पानी की गति एक ही है। कवि कहते है कि नर (मनुष्य) जितना विनीत (नम्र, विनयशील) होता है उन्हें उतना मान सम्मान मिलता है।उतना श्रेष्ठ और ऊँचा बनता है। उसी प्रकार नल का पानी जितनानीचे बहता चलता है उस उतना ऊपर उठाया जाता है। इस लिए नर को नल नीर जैसा होना चाहिए।

IX. प्रश्नोत्तर :

प्र.1. रहीम के अनुसार सच्चे मित्र की पहचान कब होती है।

उ. रहीम के अनुसार सच्चे मित्र की पहचान विपत्ति के समय होती है।

प्र.2. साँचे शब्द का अर्थ क्या है?

उ. साँचे शब्द का अर्थ है सच्चा

प्र.3. पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुष, चून-पंक्ति का भाव बताइए।

उ. इस दोहे में रहीम ने पानी शब्द के तीन अर्थ बताये हैं। जो जल, इज्जत, चमक से सम्बन्धित है। इज्जत के बिना मनुष्य, चमक के बिना मोती और जल के बिना चूना व्यर्थ होता है। पानी के बिना इन तीनों का कोई महत्व नहीं है।

प्र.4. किसके मिलने पर मनुष्य पागल हो जाता है?

उ. स्वर्ण के मिलने पर मनुष्य पागल हो जाता अर्थात संपत्ति मिलने से एक प्रकार के अभिमान का नशा चढ़ता है।

प्र.5. बिहारी ने नर की तुलना किससे की है?

उ. बिहारी ने नर की तुलना नल-नीर (नल के जल) से की है।

प्र.6. बिहारी के अनुसार व्यक्ति को कैसा होना चाहिए।

उ. बिहारी के अनुसार व्यक्ति को विनम्र और विनयशील होना चाहिए।

X. अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया प्रश्न

अ. प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

प्र.1. नीति वचनों का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव होता है?

उ. नीति वचनों के कारण नैतिक गुणों का विकास होता है। अच्छे-बुरे की पहचान होती है। सही गलत का भेद पता चलता है। हमारे जीवन, आचार-विचार में परिवर्तन आता है नीति वचनों के अनुकरण द्वारा सामाजिक बुराइयों को भी संमार्ग पर लाया जा सकता है।

प्र.2. वस्तु विनियोग की दृष्टि से एक के स्थान पर उससे अधिक वस्तुएँ खरीदना ठीक नहीं है? क्यों?

उ.

एक से अधिक वस्तुओं का खरीदना उचित नहीं है क्योंकि उपभोक्ता (खरीद ने वालों) की आर्थिक स्थिति के आधार पर सीमित मात्राओं में वस्तुओं का निर्माण होता है। अधिक वस्तु खरीदने से खरीदने वाला पैसा व्यर्थ करता है साथ ही आवश्यक उपभोक्ताओं को वह वस्तुएँ नही मिलती हैं, वस्तुओं की कमी होने पर निर्माता उनके दाम बढ़ा सकते हैं।महंगाई बढ़ेगी। उपभोक्तओं में उस वस्तु को पाने की होड़ लगेगी जिसके कारण बाजार में उतार च ढाव बढेगा।

आ. पाठ पढ़िए। अभ्यास कार्य कीजिए।

प्र.1. पाठ से 'ध्वनि साम्य' वाले शब्द चुनकर लिखिए। जैसे रीत-भीत आदि।

उ. ध्वनिसाम्य वाले शब्द जैसे सून-चून, जेतै-तेतै, जोइ-होइ खाए-पाए आदि।

प्र.2. रहीम के दोहे में 'पानी' शब्द का प्रयोग कितनी बार हुआ है। उसके अलग-अलग अर्थ क्या हैं?

उ. रहीम के दोहे में 'पानी' शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है। एक पानी का अर्थ इज्जत मनुष्य के लिए, दूसरे पानी का अर्थ चमक, मोती के लिए और तीसरी बार पानी का जल केअर्थ में चूने के लिए हुआ है। इन तीनों भिन्न अर्थो के साथ तीनों ही वस्तुएँ अर्थ हीन या व्यर्थ होंगी।

इ. भाव स्पष्ट कीजिए

प्र.1. रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून। पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून।

उ. (उत्तर रहीम के दूसरे दोहे का भाव)

प्र.2. कनक कनक तै सौ गुनी, मादकता अधिकाइ

उहि खाए बौराइ जग, इहिं पाए बौराइ।

(बिहारी के प्रथम दोहे का भाव)

XI. अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता

अ. इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

प्र.1. रहीम ने जल के महत्व के बारे में क्या बताया है?

उ. रहीम ने अपने दोहे में 'पानी' शब्द का जल के अर्थ में महत्व बताते हुए कहा है कि जल के बिना चूना व्यर्थ है। जल में भीग कर हो चूना दीवारों पर लगाने योग्य बनता है। बिना जल के चूने का पत्थर व्यर्थ ही रहता है।

प्र.2. बिहारी ने सोन (स्वर्ण) की तुलना धतुरे से क्यों की होगी?

उ.बिहारी ने सोने की तुलना धतुरे से इसलिए की होगी क्योंकि धतुरा एक ऐसा पौधा है जिस के फल एवं पत्तों में नशा होता है। उसे खाने से नशा चढता है। उसी प्रकार स्वर्ण, धन सम्पति में घमण्ड का नशा होता हैं। संपत्ति, स्वर्ण को देख लेने, पा लेने मात्र से ही व्यक्ति में अभिमान का नशा चढ़ जाता है जबकि धतुरे के खाने पर नशा चढ़ता है। इसलिए स्वर्ण के नशे को धतुरे से सौ गुणा अधिक मादक बताया गया है।

आ. किन्हीं दो दोहों का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

सारांश में सभी दोहों के भाव हैं। किन्ही दो को विद्यार्थी पढ़ कर लिख सकते हैं)

इ. पाठ में दिए गए दोहों के आधार पर कुछ सूक्तियाँ लिखिए।

1. विपत्ति अपने पराये की पहचान करवाती है।
2. विपत्ति में साथ देने वाला सच्चा साथी है।
3. धन, ज्ञान, मान पाकर विनम्र होना चाहिए।
4. विनम्रता श्रेष्ठता की पहचान है।
5. स्वर्ण अभिमान का प्रतीक है।
6. इज्जत एवं मान के बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ है।
7. पैसे का नशा सिर चढ़कर बोलता है।
8. विनय से मित्र बनते हैं घमण्ड से शत्रु
9. विपत्ति मित्रता की कसौटी है।
10. पानी जीवन है।

ई. पाठ में दिए गए दोहों में आपको कौनसा दोहा बहुत अच्छा लगा क्यों?

उ. पाठ में दिए गए दोहों में मुझे रहीम का यह दोहा ''कहि रहीम संपत्ति, बनत बहुत बहु रीत'' अच्छा लगा कयों कि इस दोहे से सच्चे मित्र को पहचानने की नीति मिलती है।

XII. भाषा की बात :

अ. अर्थ के अनुसार बेमेल शब्द पहचानिए।

1. नीर, पीर, जल, पानी - पीर
2. मीत, रीत, मित्र, दोस्त - रीत
3. जग, संसार, विश्व मग - मग

आ. यमक अलंकार समझिए

1. **यमक** : यमक का अर्थ दो होता है। किसी शब्द की पुनरावृति भिन्न-भिन्न अर्थो में होती है तो उसे यमक अलंकार कहते हैं।

   उदाहरण : कनक कनक तै सौ गुनी, मादकता अधिकाइ।

   उहि, खाए बौराइ जग, इहि पाए बौराइ।

2. **दोहा छंद समझिए**

   दोहा मात्रिक छंद है। इसके पहले तीसरे चरण में तेरह मात्राएँ, दूसरे चौथे चरण में ग्यारह मात्राएँ होती हैं।

   । ।।। ऽऽ ऽ। ऽ

   रहिमन पानी राखिए - 13

   ।। ऽऽ ।। ऽ।

   बिन पानी सब सून। - 11

   ऽऽ ।ऽ । ऽ। ऽ

   पानी गये न ऊबरै, - 13

   ऽऽऽ। । ऽ।

   मोती मानुस चूने ॥ - 11

इ.1. यमक अलंकार का एक उदाहरण दीजिए।

वह तीन बेर खाती थी वह तीन बेर खाती थी।

2. दोहा छंद का एक उदाहरण दीजिए।

ऽ । ।।। ऽ । ।। ऽ ऽ। । । ऽ । ऽ।

दीन सबन को लखत है। दीन लख न कोय ।।

ऽ। ऽ। ऽ। । । ऽ ऽ। । ऽ ।। ऽ।

जो रहीम दीनहिं लखै , दीन बन्धु सम होय

3. नीचे दिए गये शब्दों में प्रत्यय पहचान कर वाक्य प्रयोग कीजिए।

1. लौकिक - लोक + इक

   लौकिक सुखों में पड़कर मनुष्य आलसी बन जाता है।

2. (लौकिक सुख नश्वर है।)

   नैतिक - नीति + इक

   मनुष्य के लिए नैतिकता जरूरी है।

3. पौराणिक - पुराण + इक

   यह एक पौराणिक कहानी है।